माननीय राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का मलिहाबाद में आयोजित
कार्यक्रम में उद्‌बोधन

स्थान :- लखनऊ, दिनांक :- 29 जून, 2013 समय :- शाम 7बजे

मैंगो ग्रोवर एसोसिएशन आफ इंडिया द्‌वारा आयोजित कार्यक्रम में शामिल होकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मलिहाबाद, ऊर्दू शायर जोश मलिहाबादी के नाम और दसहरी आम के माध्यम से पूरे देश में जाना जाता है। विभिन्न देशों के सम्मानीय राजदूत भी इस कार्यक्रम की शोभा और गरिमा बढ़ाने के लिए मौजूद हैं मैं उनका भी हार्दिक स्वागत करता हूं।

इस संस्था ने आम उत्पादक किसानों को भली-भांति परिचित कराया है व उसे समाधान ढूंढने में सहायता की है। इसके लिए मैं उन्हें साधुवाद देता हूं।

फलों का उल्लेख होते ही हमारे ज़ेहन में सबसे पहले "आम" सहज ही आ जाता है। रसीला और स्वादिष्ट होने के कारण यह फलों का राजा कहलाता है। फिर मलिहाबादी दशहरी का तो जवाब ही कुछ और है। आम हमारे देश का सबसे महत्वपूर्ण फल है। इसकी खेती उत्तरप्रदेश सहित कई राज्यों में होती है और इसकी लगभग 50 प्रजातियाँ है, लेकिन जो स्वाद और मिठास मलिहाबादी आम में है वह किसी और में नहीं है। मलिहाबादी आम अपनी लज्जत और खुशबू के कारण पूरी दुनिया में मशहूर है। जब भी आम की किस्मों का जिक्र होता है, इसका नाम पूरे सम्मान से लिया जाता है।

उर्दू के प्रसिद्‌ध शायर मिर्जा गालिब आम प्रेमी थे, जिन्होंने इस फल की प्रशंसा में 32 शेर कह कर अपने उस महासंकलन का एक हिस्सा बनाया जिसके आधार पर वह समस्त संसार के महान कवियों की सूची में अग्रणी स्थान रखते हैं। आज प्रस्तुत नाटक के माध्यम से आम और गालिब के शीर्षक को स्थापित किया गया जो प्रशंसनीय है। मैं कलाकारों को बधाई देता हूं। उर्दू और हिन्दी की सजीव करके बड़े अनोखे ढंग से भाषाई सौहाद्र्र का बहुत सुंदर संदेश देने का सफल प्रयास किया गया तथा कार्यक्रम में विविधता आ गई है। गलिब ने अपनी कुछ पंक्तियों से आम को साहित्य का विषय बनाया था, उसके विस्तार के तौर पर जाने माने शायर सुहैल

काकोरवी ने ""आम नामा"" रच दिया। साहित्यकारों, धार्मिक विभूतियों और अपने सम्पर्क में आने वालों के नाम आम के साथ उपयोग किये और अलग-अलग नाम के आमों के लिए भी शेर कहे, आम के लाभ और विशेषताओं के उल्लेख ने पुस्तक को दस्तावेज बनाया। यह शायरी में पुस्तक के रूप में पहली प्रस्तुति है जो ऐतिहासिक बन जाये, यह हमारी कामना है। आज इस पुस्तक का विमोचन करना सुखद अनुभूति बन गया तथा इस बार समारोह का सीधा सम्पर्क शायरी साहित्य से हो गया।

वेदों में आम को विलास का प्रतीक कहा गया है। कविताओं में इसका जिक्र हुआ और कलाकारों ने इसे अपने कैनवास पर उतारा। भारत में गर्मियाँ शुरू होते ही आम पकने का इंतजार होने लगता है। आंकड़ों के मुताबिक इस समय भारत में प्रतिवर्ष एक करोड़ टन आम पैदा होता है जो दुनिया के कुल उत्पादन का 52 प्रतिशत है। आम भारत का राष्ट्रीय फल भी है।

मौसम की मार का आम के उत्पादन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। गर्मियों में आम के पेड़ों पर जैसे ही बौर आना शुरू होता है तो लगता है कि अब आम की पैदावार खूब होगी, लेकिन तेज हवा और असमय वर्षा के कारण जहां बौर झड़ने लगता है वहीं सही समय पर कीटनाशक दवा न डालने और पानी नहीं मिल पाने के कारण इसकी पैदावार कम हो जाती है। यही कारण है कि इस वर्ष आम की पैदावार कम हुई है। मलिहाबाद का दशहरी आम इस साल लोगों को बहुत कम खाने को मिलेगा। पिछले कई साल के बाद इस साल उत्तरप्रदेश में आम की पैदावार कम हुई है। उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग अनुसार दशहरी समेत अन्य आम का उत्पादन 15 से बीस लाख टन होने की सम्भावना है जो हर साल होने वाले उत्पादन के आधा से भी कम है। कम उत्पादन होने के कारण आम महंगा भी मिलता है।

मलिहाबादी दशहरी आम का मूल वृक्ष लगभग 150 साल पुराना है। यह उत्तरप्रदेश की मलिहाबाद तहसील के काकोरी ब्लाक के दशहरी गांव में आज भी मौजूद है। मूल वृक्ष की ऊंचाई 10 मीटर है और इसका तना तीन मीटर मोटा है। पिछले दस साल से यह हर साल 79 से 189 किलो आम दे रहा है। इसी पेड़ से पैदा हुए आम के पेड़ मलिहाबादी दशहरी को उसी खास पहचान देते हैं। इस वृक्ष को धरोहर का दर्जा प्राप्त है।

मलिहाबादी आम का पेटेन्ट कराने के लिए संस्था के अध्यक्ष श्री इंसराम अली को मुबारकबाद देता हूं। इस उपलब्धि के लिए संस्था के अन्य पदाधिकारी भी प्रशंसा के पात्र हैं। मलिहाबादी

दशहरी आम का पेटेंट होने से यहां के आम उत्पादकों को बहुत लाभ हुआ है। जीआई टैग मिलने के बाद अब किसी भी आम को मलिहाबादी दशहरी आम कहकर बेचा नहीं जा सकेगा। अब मलिहाबादी दशहरी आम को भौगोलिक संकेतक का विशेष कानूनी दर्जा प्राप्त हो गया है। इससे पहले दार्जीलिंग चाय को इस तरह का दर्जा मिला था, मलिहाबादी आम को यह विशेष दर्जा भारत सरकार के भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्री कार्यालय चैन्नई ने एक विशेष कानून के तहत दिया है। इससे किसान विदेशों में भी ऊंचे दामों पर इसे बेच सकेंगे। दशहरी आम को विशेष कानूनी पहचान मिलने से मलिहाबादी आम उत्पादक किसानों की आमदनी बढ़ेगी।

दुनिया के कुल आम का 50 प्रतिशत से ज्यादा भारत में पैदा होता है और आंध्रप्रदेश के बाद उत्तरप्रदेश में सबसे ज्यादा आम पैदा होता है। अब तक आम सिर्फ सऊदी अरब और यूएई जैसे अरब देशों में जाते थे लेकिन अब आशा है कि इन्हें लगभग 15 दूसरे देशों में भी भेजा जा सकेगा। इस कामयाबी से मलिहाबादी आम के उत्पादक भी काफी खुश होंगे क्योंकि इन रसीले आमों को तैयार करने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी है।

मैं इस समय वैज्ञानिकों से आव्हान करता हूं कि वह दशहरी आम की किस्म सुधारने और उसकी फसल को बचाने के उपाय करने में किसानों की मदद करें जिससे उत्पादन बढ़ सके और यह ज्यादा दिन तक टिक सके।

आम की खेती को होने वाले नुकसान को देखते हुए मैं यही कहना चाहूंगा कि राज्य सरकारों को आम उत्पादकों को सहायता के तौर पर सब्सिडी बढ़ाना चाहिए। वहीं प्रदेश में ऐसे प्रबंध किये जायें कि आम की फसल के समय किसानों को समय पर बिजली उपलब्ध हो सके।

मुझे आशा है कि इस प्रकार के कार्यक्रम के आयोजन से मलिहाबादी दशहरी आम के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा मिलेगा और लोगों को असली और नकली मलिहाबादी दशहरी आम में फर्क मालूम हो सकेगा। मैं आप सबको शुभकामनाए देता हूं और उम्मीद करता हूं कि आप सब लोगों की कोशिशों से मलिहाबादी दशहरी आम की लोकप्रियता इसी तरह कायम रहेगी और इसके विदेशों में निर्यात बढ़ने से जहां देश को विदेशी मुद्रा प्राप्त होगी वहीं प्रदेश का विकास तेजी से हो सकेगा।

जय हिन्द।